>

Title: Problems arising due to the rapid commercialization of education in the country.

**डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी (अहमदाबाद पश्चिम):** सभापति महोदय, मैं आपका अभारी हूं कि आपने मुझे शिक्षण में व्याप्त व्यापारीकरण का मुद्दा उठाने की अनुमति दी है। आज कल देखा जाए तो शिक्षण में व्यापारीकरण हो गया है। केजी कक्षा से लेकर हायर एजुकेशन तक देखा जाए तो शिक्षण में पूरी तरह से व्यापारीकरण हो गया है। आजकल केजी कक्षा में एडमिशन के लिए एक लाख रूपया या दो लाख रूपया का प्रावधान होता है। यह सभी कोई जानते हैं। मैं अपनी बात मेडिकल शिक्षण के बारे में ज्यादा आकर्षित करना चाहता हूं। कल के टाइम्स ऑफ इंडिया में खबर छपी थी उसमें लिखा गया था नवी मुम्बई की एक निजी मेडिकल कॉलेज में रेडियोलॉजी की पोस्टग्रजुएट सीट को 1 करोड़ 70 लाख रूपये में, कहो कि बेची गई थी। यह एक दुखद एवं शर्मनाक घटना है। अगर हम मेडिकल एजुकेशन की बात करें तो अंडर गेजुएट मेडिकल कॉलेज में निजी बैठकों के लिए 50 लाख से ले कर ऊपर तक के लोगों को पैसा देना पड़ता है। मानो कि सिर्फ उसका व्यापार हो रहा है। मैं इस पर अपनी आपत्ति जताना चाहता हूं। सभापति जी, शिक्षण में जो पोस्ट-ग्रेजुएशन है वहां रेडियोलॉजी है आर्थोपेडिक है वहां कई ऐसे डिपार्टमेंट हैं, 70 लाख, 80 लाख, करोड़ और उससे भी ज्यादा जैसा मैंने अभी बताया की 1 करोड़ 70 लाख में व्यापार हो रहा है। इस पर रोक लगानी चाहिए। एनआरआई की जो सीटें हैं उसमें डॉलर में सब प्रावधान होता है। मैं मानता हूं कि हमारे देश के जो गरीब बच्चे हैं, जो दलितों, छोटे किसानों, वनवासी और श्रमजीविओं के बच्चे हैं मुझे लगता है कि अगामी वर्षों में उन के लिए कोई प्रावधान नहीं हो सकेगा। इसिलिए मैं आपके माध्यम से, इस सदन के माध्यम से माननीय एचआरडी मिनिस्टर और हेल्थ मिनिस्टर का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि शिक्षण का जो व्यापारीकरण है उस पर रोक लगा दी जाए। जो लोग व्यापारीकरण करते हैं, जो संस्थाएं व्यापारीकरण करती हैं उनको दंडित किया जाए और जब मेडिकल कालेज या शिक्षण संस्था का रिकॉग्निशन होता है उस वक्त उस पर प्रावधान रखा जाए ताकि कोई ऐसा काम नहीं कर सके। धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN : Shri Shivkumar Udasi, Dr. Rajan Sushant, Shri Virendra Kumar, and Shri Mahendrasinh P. Chauhan are permitted to associated with the issue raised by Dr. Kirit Premjibhai Solanki.